पाठ 9. पिता का न्याय

पाठ का परिचय

पांचाल देश की राजकुमारी केशनी रूप और गुण में अद्‌वितीय थी। जब वह विवाह योग्य हुई तो उसने पिता से कहा कि वह उसी राजकुमार के साथ विवाह करेगी जो आत्मा को जानता हो अथवा आत्मा को जानने में रुचि रखता हो। पुत्री के निश्चय के अनुसार राजा ने चारों ओर घोषणा करा दी। राजा की घोषणा सुनकर देश-विदेश के राजकुमार आए लेकिन कोई भी राजकुमारी के प्रश्नों के सही उत्तर न दे सका। ऋषिकुमार सुधन्य भी विवाह के उद्‌देश्य से केशनी की सेवा में आया और उसने केशनी की जिज्ञासाओं का सही-सही उत्तर दिया। केशनी और सुधन्य के विवाह की चर्चा चारों ओर फैल गई। लोग आश्चर्य प्रकट करने लगे क्योंकि केशनी राजपुत्री और सुधन्य निर्धन ऋषिकुमार था। जब इस बात का पता प्रह्‌लाद के पुत्र विरोचन को हुआ तो उसने अपना विवाह प्रस्ताव भेजा। केशनी ने दोनों को प्रातःकाल वाद-विवाद के लिए बुलाया। वाद-विवाद में सुधन्य जीत गया। विरोचन ने किसी को निर्णायक बनाने की माँग की। सुधन्य ने उसके पिता प्रह्‌लाद को ही न्याय की कुर्सी पर बैठा दिया। अंत में राजा प्रह्‌लाद को भी मानना पड़ा कि सुधन्य का कथन ही सत्य है। फलतः सुधन्य और केशनी का विवाह हो गया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

संसार में धन ही सब कुछ नहीं है। धन नाशवान है, नाश होने वाली वस्तु का संग्रह कभी नहीं करना चाहिए। आत्मा का ज्ञान श्रेष्ठ ज्ञान है।

पाठ का वाचन

कक्षा में सबसे पहले बच्चों को कहानी का मौन वाचन करने को कहें। मौन वाचन के बाद बच्चों को कहानी का सार अपने शब्दों में सुनाने को कहें। बच्चे कहानी का सार सुना दें उसके बाद अध्यापक/अध्यापिका स्वयं कहानी का वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। कहानी से प्राप्त शिक्षा को कक्षा में दोहराएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- धन और ज्ञान दोनों में से क्या अधिक महत्वपूर्ण है और क्यों?
- न्याय के पद पर बैठकर अन्याय करना क्यों गलत है?
- यदि तुम न्याय के पद पर बैठोगे तब तुम्हारा क्या व्यवहार होगा?
- यदि तुम राजा प्रह्‌लाद की जगह होते तो क्या निर्णय लेते?
- इस कहानी में तुम्हें सबसे अच्छा क्या लगा?